मम्मा के मस्तक में आत्मा रूपी मणि चमकती थी

● दादी हृदय मोहिनी

छोटी आयु होते भी मम्मा को सब माँ-माँ कहने लगे, तो मम्मा की स्थिति क्या होगी? मम्मा ऐसी न्यारी और प्यारी थी जैसे कोई कराने वाला करा रहा है, वे नहीं कर रही हैं। न्यारापन हमेशा प्यारा होता है। मम्मा सबकी प्यारी थी।

ड्रामानुसार मम्मा की शक्ल ऐसी थी जो उनके मस्तक से लाइट जैसे दिखाई देती थी। लाइट और माइट जिनमें होगी उनकी सूरत, चलन क्या होगी आप खुद समझ सकते हो। मम्मा को कहना नहीं पड़ता था कि आत्मा को देखो लेकिन मम्मा के मस्तक में देखते ही आत्मा की अनुभूति होती थी। कोई स्थूल में ऐसी लाइट नहीं दिखाई देती थी लेकिन पवित्रता की जो शक्ति थी वो आकर्षित करती थी। मम्मा ने कितनी कुमारियाँ सम्भाली। मम्मा में सहनशक्ति कितनी होगी! बातें तो होंगी ना क्योंकि हम लोग तो घरों से नये-नये आये थे। कोई ज्ञान लेके थोड़ेही आये थे? घरों से आते हैं तो हर एक के संस्कार भिन्न-भिन्न तो होते हैं ना, भिन्न-भिन्न स्थानों से, भिन्न-भिन्न संस्कारों वाले आये लेकिन मम्मा की पालना बहुत सुन्दर थी। मैं मिसाल सुनाती हूँ, मानो हमारे से कोई ग़लती हुई, हम छोटे-छोटे ही तो थे। मेरे से ग़लती कम होती थी लेकिन समझो कोई से ग़लती हुई तो रिपोर्ट तो मम्मा के पास जाती ही थी।

मम्मा कभी भी सीधा यह नहीं कहती थी कि तुमने यह ग़लती की, तुमको समझ नहीं है। ऐसे शब्द वो नहीं कहती थी। मम्मा यही कहती थी, बच्ची, तुम्हारे में तो बहुत गुण हैं, पता है क्या-क्या गुण हैं? फिर मम्मा गुण सुनाती थी, तुम्हारे में तो यह है, तुम्हारे में तो यह है, ऐसे गुणों की महिमा करके कहती थी, इतने गुण हैं, अभी एक छोटी-सी बात है, इसको खत्म नहीं कर सकती हो? गुणों के आगे यह क्या है? कुछ नहीं है। यह तो गयी कि गयी। तो प्यार से पहले उनकी महिमा करके, हिम्मत देके,

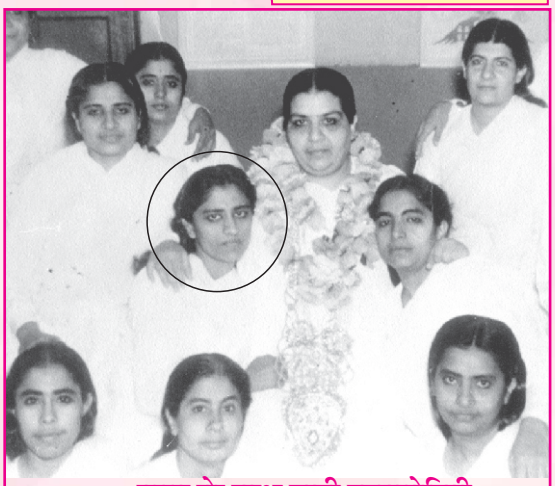

मम्मा के साथ दादी हृदयमोहिनी

करेक्शन करके ऐसा हल्का कर देती थी जो गुणों की धारणा करना मुश्किल नहीं लगता था। उमंग से समझाती थी तो हम समझ जाते थे और लगता था कि बदलना कोई बड़ी बात नहीं है। ❖

जगदम्बे जगत जननी

अल्फाज़ वो कहाँ से, हम ढूँढ़ करके लायें।
जगदम्बे जगत जननी, महिमा तेरी जो गायें।।
तुझे याद कर रहे हैं माँ लाल तेरे सारे,
आजा कहाँ छुपी हैं, हम सब तुझे बुलायें,
वीणा बड़ी मधुर थी, तेरी ज्ञान की भवानी,
झंकार उन सुरों की, कैसे भला भुलायें,
तेरी ज्योति है निराली, तेरी शान है निराली,
सृष्टि रचता ब्रह्मा भी गीत तेरे गायें,
राधा भी तू है मैया और लक्ष्मी भी तू है,
तू है अनेक रूपा, सब तुझको सर झुकायें,
अल्फाज़ वो कहाँ से.....।
जगदम्बे जगत जननी.....।।

– ब्र.कु. वीरेन्द्र भाई, कासगंज